

श्री अनन्पूरणा चालीसा  
वशिवेश्वर पदपदम की रज नजि शीश लगाय  
अनन्पूरणे ! तव सुयश बरनौ कवमितलियाय

नतिय आनंद करणी माता, वर अरु अभय भाव प्रख्याता  
जय ! सौंदर्य सधु जग जननी, अखलि पाप हर भव भय हरनी  
श्वेत बदन पर श्वेत बसन पुनि, संतन तुव पद सेवत ऋषमिनि  
काशी पुराधीश्वरी माता, माहेश्वरी सकल जग त्राता  
वृषभारुढ नाम रुद्राणी, वशिव वहारणि जय ! कल्याणी  
पतदिवता सुतीत शरौमणि, पदवी प्रापत कीन्ह गरी नंदनि  
पति विछोह दुःख सहि नहि पावा, योग अगनि तब बदन जरावा  
देह तजत शवि चरण सनेहू, राखेहु जात हमिगरि गेहू  
प्रकटी गरिजा नाम धरायो, अत आनंद भवन मँह छायो  
नारद ने तब तोह भिरमायहु, ब्याह करन हति पाठ पढायहु  
ब्रहमा वरुण कुबेर गनाये, देवराज आदकि कहि गाये  
सब देवन को सुजस बखानी, मति पलटन की मन मँह ठानी  
अचल रही तुम प्रण पर धन्या, कीहनी सदिध हमिचल कन्या  
नजि कौ तब नारद घबराये, तब प्रण पूरण मंत्र पढाये  
करन हेतु तप तोह उपदेशेउ, संत बचन तुम सत्य परेखेहु  
गगनगरि सुनि टिरी न टारे, ब्रहं तब तुव पास पधारे  
कहेउ पुत्रविर माँगु अनूपा, देहुँ आज तुव मति अनुरुपा  
तुम तप कीन्ह अलौकिकि भारी, कष्ट उठायहु अति सुकुमारी  
अब संदेह छाँडि कछु मोसौं, है सौगंध नही छल तोसौं  
करत वेद वदि ब्रहमा जानहु, वचन मोर यह सांचा मानहु  
तजि संकोच कहहु नजि इच्छा, देहौं मै मनमानी भकिषा  
सुनि ब्रहमा की मधुरी बानी, मुख सौं कछु मुसुकाय भवानी  
बोली तुम का कहहु वधिाता, तुम तो जगके सर्षटाधाता  
मम कामना गुप्त नहि तौसौं, कहवावा चाहहु का मौसौं  
दक्ष यज्ज मँह मरती बारा, शंभुनाथ पुनि होहि हमारा  
सो अब मलिह भोह भिनभाये, कहि तिथास्तु वधिधाम सधियाये  
तब गरिजा शंकर तव भयऊ, फल कामना संशयो गयऊ  
चन्द्रकोटि रवि कोटि प्रकाशा, तब आनन मँह करत नविसा  
माला पुस्तक अंकुश सोहै, कर मँह अपर पाश मन मोहै  
अनन्पूरणे ! सदापूरणे, अज अनवघ अनंत पूरणे  
कृपा सागरी क्षेमंकरि माँ, भव वभूति आनंद भरी माँ  
कमल बलिचन वलिसति भाले, देवि कालकि चण्डि कराले  
तुम कैलास मांहा है गरिजा, वलिसी आनंद साथ सधुजा  
स्वर्ग महालछमी कहलायी, मर्त्य लोक लछमी पदपायी  
वलिसी सब मँह सर्व सरुपा, सेवत तोह अमर पुर भूपा  
जो पढहिह यह तव चालीसा फल पाइंहहि शुभ साखी ईसा  
प्रात समय जो जन मन लायो, पढहिह भिक्ती सुरुचि अघकियायो  
सत्त्री कलत्र पति भित्ति पुत्र युत, परमेश्वर्य लाभ लहि अद्भुत  
राज वमिख को राज दविवै, जस तेरो जन सुजस बढ़ावै  
पाठ महा मुद मंगल दाता, भक्त मनोवाँछति नधि पाता

तनिके कारज सदिध सब साखी काशीनाथ